International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक सभ्यताः एक तुलनात्मक अध्ययन

श्याम मूर्ति भारती
(नेट–यू॰जी॰सी॰)
(पी–एच॰डी– ल॰ ना॰ मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)
इतिहास

विषय प्रवेशः

सिन्धुघाटी की सभ्यता की खोज से पूर्व भारतीय इतिहास की व्यवस्थित शुरूआत वैदिक काल से मानी जाती थी। किन्तु बीसवीं सदी के तीसरे दशक में रेल लाइनों के विकास हेतु जब उत्खन्न किया जा रहा था तब हड़प्पा (वर्तमान पाकिस्तान) नामक स्थल से पुरातात्विक महत्व की कुछ ऐसी वस्तुएँ प्राप्त हुई, जो किसी प्राचीन सभ्यता का संकेत दे रही थी। जब पुरातत्वशास्त्रियों दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी के निर्देशन में इस स्थान पर उत्खनन किया गया तो एक ऐसी सभ्यता प्रकाश में आयी जो अपने समकालीन सभ्यताओं में सबसे विकसित थी। इस सभ्यता के सिन्धुघाटी क्षेत्र तक सीमित होने के अनुमान के कारण इसे सिन्धुघाटी की सभ्यता के नाम से सम्बोधित किया गया। किन्तु सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि वर्ष 1921 में सबसे पहले हड़प्पा नामक स्थल पर इस सभ्यता का पता चला जो पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रान्त में अवस्थित है।

सिन्धुघाटी की सभ्यता के पतन के पश्चात भारत में 1500 ई॰ पू॰ के आसपास जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आयी उसे वैदिक संस्कृति अथवा वैदिक सभ्यता के नाम से सम्बोधित किया गया। इस सभ्यता के सम्बंध में चूँकि सम्पूर्ण जानकारी वेदों से प्राप्त होती है। इसलिए इस सभ्यता का नामकरण वैदिक सभ्यता किया गया इस सभ्यता की स्थापना आर्यों द्वारा की गई थी इसलिए इसे आर्य सभ्यता भी कहा जाता है।

सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता दोनों भारत की प्राचीन सभ्यताएँ है। दोनो सभ्यताओं के मध्य समानता एवं असमानता के कई तत्व विद्यमान है। अतः दोनों सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन समीचीन है। इन दोनों सभ्यताओं के मध्य मूल अंतर यह था कि सिन्धु सभ्यता जहाँ नगरीय सभ्यता थी वहीं वैदिक काल ग्रामीण सभ्यता।

सिन्धु सभ्यता के सन्दर्भ में जानकारी हेतु प्रमुख स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य हैं जिनमें मृद्भाण्ड, इमारतें, मुहरें, सिक्के तथा आभूषण आदि है। इस काल से सम्बंधित जो लिपिगत साक्ष्य है वे अभी तक पढ़े नहीं जा सके है। वैदिक सभ्यता के सन्दर्भ में जानकारी हेतु दो प्रकार के स्त्रोत उपलब्ध हैं। पुरातात्विक एवं साहित्यिक। पुरातात्विक स्त्रोंतों में प्रमुख हैं। विभिन्न स्थानों से प्राप्त चित्रित घूसर मृदभाण्ड, बोगोजकोई/मितन्नी अभिलेख जिनमें वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र, वरूण तथा नासत्य आदि का उल्लेख है। वैदिककालीन साहित्यिक स्त्रोतों में प्रमुख स्त्रोत वेद हैं जो कि ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के रूप में है। ऋग्वेद में 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसमें भौगोलिक स्थिति तथा देवताओं के आह्वान हेतु उच्चारित किए जाने वाले मंत्रों का उल्लेख है। इस वेद के प्रमुख पुरोहित होतृ थे। यजुर्वेद का प्रधान विषय यज्ञ कार्य है। सामवेद संगीत–शास्त्र आदि से सम्बंधित है। अथर्ववेद के संदर्भ में यह माना जाता है कि इसकी रचना सबसे बाद में हुई। इसमें विभिन्न औषधियों एवं जादू–टोने के बारे में उल्लेख किया गया है।

सिन्धु सभ्यता के कालक्रम के सम्बंध में सर्वमान्य तिथि 2400 ई॰ पू॰ से 1700 ई॰ पू॰ है। इस तिथि का निर्धारण रेडियोकार्बन जैसी पद्धति के विश्लेषण के आधार पर किया गया है। वैदिक काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया गया है–

1. ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई॰ पू॰) तथा
2. उत्तरवैदिक काल (1000 ई॰ पू॰ – 600 ई॰ पू॰)।

उत्खनन से प्राप्त मानव कंकालों के परीक्षण से यह निर्धारित हुआ है कि सिन्धु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थी– भूमध्यसागरीय, प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉयड, अल्पाइन तथा मंगोलॉयड। इन चारों प्रजातियों में सर्वाधिक संख्या भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोगों की थी। वैदिक सभ्यता के प्रवर्तक आर्य थे। यहाँ आर्य शब्द से तात्पर्य है– श्रेष्ठ, कुलीन, उत्तम, अभिजात्य तथा उत्कृष्ट। आर्यों के मूल

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निवास के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग–अलग मत दिए हैं– प्रो॰ मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थल मध्य एशिया (बैक्ट्रिया) का माना है। बाल गंगाधर तिलक ने उत्तरी ध्रुव, दयानन्द सरस्वती ने तिब्बत, प्रो॰ पेंका ने जर्मनी के मैदानी भाग, डा॰ अविनाश चंद्र दास ने सप्त सैन्धव प्रदेश तथा नेहरिंग एवं प्रो॰ गार्डन चाइल्ड ने आर्यों का मूल निवास स्थल दक्षिणी रूस को माना है। निवास स्थल के सन्दर्भ में उपरोक्त सभी मतों में मैक्समूलर के विचार पर अधिकांश विद्वानों ने सहमति जतायी है तथा इसे सर्वाधिक तार्किक माना है।

सिन्धु सभ्यता का उद्भव भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। ताम्रपाषाणिक सिन्धु सभ्यता के परिपक्व संस्कृति का केन्द्र स्थल पंजाब तथा सिन्धु, मुख्यतः सिन्धुघाटी में अवस्थित है। इसका विस्तार भारत पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों तक था। इसके अर्न्तगत पंजाब, सिन्ध तथा बलूचिस्तान के अतिरिक्त गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा आदि सम्मिलित थे। इस संस्कृति का प्रसार उत्तर दिशा में जम्मू के मांदा से लेकर दक्षिण दिशा में नर्मदा नदी के मुहाने पर महाराष्ट्र में दैमाबाद तक, उत्तर–पूर्व में हिन्डन नदी के तट पर आलमगीरपुर से पश्चिम में दाश्क नदी के तट पर सुत्कागेंडोर तक था। यह सभ्यता त्रिभुजाकार स्वरूप में थी। क्षेत्रफल में प्राचीन मिस्र तथा मेसोपोटामिया से भी बड़ी इस सभ्यता का कुल क्षेत्रफल लगभग 13 लाख वर्ग किमी॰ है। अभी तक इस सभ्यता से जुड़े लगभग 2800 स्थल ज्ञात किए जा चुके है।

सिन्धु सभ्यता के उद्भव के सन्दर्भ में कई मान्यताएं प्रचलित रही है जिनमें सिन्धु सभ्यता के अचानक उद्भव का सिद्वान्त, मेसोपोटामियाई लोगों द्वारा नगरीय जीवन की स्थापना, आर्यो अथवा द्रविड़ो की देन आदि प्रमुख है। उद्भव सम्बंधी उपरोक्त सभी मतों में क्रमिक उद्भव का सिद्धान्त सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है। जिसके अनुसार स्थानीय ग्रामीण संस्कृतियों के विकास से इस सभ्यता का उद्भव हुआ। यद्यपि इस प्रक्रिया में मेसोपोटामियाई तत्वों ने भी अपनी भूमिका निभाई होगी। यह भूमिका व्यपारिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान द्वारा ही संभव हुआ होगा।

वैदिक सभ्यता के प्रवर्तक आर्यों का मूल निवास यूरेशिया अर्थात आल्प्स पर्वत के पूर्वी क्षेत्र में था। हिन्द आर्य मध्य एशिया से भारत की ओर आए तथा भारत में सर्वप्रथम पंजाब एवं अफगानिस्तान क्षेत्र में बसे। आर्यो के भारत आगमन के सन्दर्भ में सूचना सर्वप्रथम हिन्द–यूरोपीय भाषाओं के सबसे पुराने ग्रंथ ऋग्वेद से मिलती है। साहित्यिक स्त्रोतो के अतिरिक्त आर्यो के भारत आगमन के सन्दर्भ में पुरातात्विक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। इन प्रमाणों में आर्यों द्वारा प्रयोग किये जानेवाले हथियार जो पश्चिमोत्तर भारत में मिले हैं, प्रमुख हैं। आर्यों का जब भारत आगमन हुआ तो उनका दास–दस्यु आदि नाम से प्रचलित स्थानीय जनों के साथ संघर्ष हुआ था। आर्यों के पास अश्वचालित रथ थे, जिसके कारण उन्हें प्रत्येक स्थान पर विजय मिली। आर्यों का संघर्ष दो रूपों में देखने को मिलता है।

1. स्थानीय जनों के साथ संघर्ष तथा
2. आर्यों के मध्य संघर्ष। आर्य पांच कबीलो में विभक्त थे। जिन्हें पंचजन की संज्ञा दी गई थी।

सिन्धु घाटी से प्राप्त विभिन्न अवशेषों के आधार पर सिन्धु सभ्यता के सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अवशेषों से यह स्पष्ट होता है कि सिन्धु घाटी के निवासियों का जीवन सुखी एवं सुविधापूर्ण था। तथा समाज की इकाई परंपरागत तौर पर परिवार था। सिन्धु स्थलों से अधिक संख्या में प्राप्त मूर्तियों एवं मुहरों पर अंकित चित्र से यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था। तत्कालीन आवासों की संरचना आर्थिक विषमता की ओर संकेत करते है। तथा विभिन्न वर्गों की मौजूदगी का भी पता चलता है। समाज को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– विद्वान (पुरोहित) वर्ग योद्धा वर्ग, व्यापारी वर्ग तथा श्रमिक वर्ग। इन चारों वर्ग में संभवतः पुरोहित अथवा विद्वान वर्ग को सर्वाधिक सम्मानित स्थान प्राप्त था।

सिन्धु सभ्यता के लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। चावल के प्रथम साक्ष्य लोथल एवं रंगपुर से प्राप्त हुई हैं। सिन्धु वासियों के आहार में गेहूँ एवं जौ प्रमुख थे। निवासियों द्वारा सूती तथा ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। पुरूष लम्बी शाल या दुपट्टा दाएं कंधे के उपर फेंककर ओढते थे। स्त्री एंव पुरूष दोनों आभूषण धारण करते थे। चन्हूदड़ों से लिपिस्टिक के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। मनोरंजन हेतु मछली पकड़ना, शिकार करना तथा चौपड़ और पासा खेलना आदि साधनों का प्रयोग करते थे। सिन्धु घाटी की सभ्यता एक शान्तिप्रिय सभ्यता थी। यहाँ के लोग तलवार से परिचित नहीं थें। सिन्धु निवासी गणित, धातु निर्माण तथा माप–तौल प्रणाली की जानकारी रखते थे। तौल की इकाई संभवतः 16 के अनुपात में थी। अन्त्येष्टि हेतु दाह–संस्कार, पूर्ण समाधीकरण एवं आंशिक समाधीकरण की प्रथा थी। किन्तु पूर्ण समाधीकरण सर्वाधिक प्रचलित था।

वैदिक काल के दोनों भागों अर्थात ऋग्वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल में प्रत्येक व्यवस्था में स्थायित्व एवं परिर्वतन के तत्व दिखाई पड़ते हैं। वैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि ऋग्वैदिक कालीन समाज पितृसत्तात्मक था। सामाजिक संगठन का आधार गोत्र अथवा जन्ममूलक था। लोग कबीले के अंग थे। वैदिक व्यवस्था के प्रारम्भ में परिवार हेतु गृह शब्द का प्रयोग हुआ है। तथा ऋग्वैदिक काल में संयुक्त परिवार की प्रथा का प्रचलन था। इस काल में नारी को पर्याप्त सम्मान प्राप्त था। ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के प्रचलन के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। वर्ण व्यवस्था के साहित्यिक साक्ष्य ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरूषसूक्त में मिलते हैं। ऋग्वेद में वर्ण शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं–कहीं व्यवसाय चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। स्त्रियाँ सभा–समितियों तथा पति के साथ यज्ञ कार्य में भाग ले सकती थी। इस काल में नियोग – प्रथा तथा विधवा–विवाह के प्रचलन का साक्ष्य मिलता है। किन्तु बाल–विवाह का कोई उदाहरण नहीं मिलता है।

उत्तर वैदिक काल में समाज का विभाजन चार वर्णों–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में हो गया था। तथा वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी। तथा वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था पर आधारित हो गया। इस काल में व्यवसाय, अनुवांशिक होने लगे। ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णो के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री हेतु कृपण शब्द का प्रयोग किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सिन्धु सभ्यता के राजनीतिक संगठन के सम्बध में किसी जानकारी का स्पष्ट अभाव है। किन्तु सैन्धव निवासियों का वाणिज्य/व्यापार की ओर आकर्षण को देख कर यह माना गया है कि हड़प्पा का शासन संभवतः वाणिक वर्ग के हाथों में था। सिन्धु सभ्यता के शासन के बारे में कई विद्वानों ने अपने अलग–अलग विचार दिये हैं। मैके के अनुसार ''मोहनजोडड़ो का शासन एक प्रतिनिधि शासक के हाथ में था।'' हण्टर के अनुसार ''मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था। स्टुअर्ट पिग्गट ने सिन्ध प्रदेश के शासन पर पुरोहित वर्ग का प्रभाव माना है।

वैदिक कालीन व्यवस्था कबीलाई होने के कारण ऋग्वैदिक काल में आर्यों का प्रशासन–तन्त्र कबीले के प्रधान के द्वारा चलता था। कबीले के सरदार को राजन नाम से सम्बोधित किया जाता था। सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था, समिति द्वारा राजा का चुनाव किया जाता था। सभा एवं समिति दोनों राजा को सलाह देनेवाली संस्था थी। स्त्रियों को भी सभा एवं समिति में भाग लेने की अनुमति थी।

उत्तर वैदिक काल में आर्यों की प्राचीन संस्था विदथ समाप्त हो गई। अब स्त्रियाँ सभा एवं समिति में भाग नहीं ले सकती थी। उत्तर वैदिक काल में राजतंत्र ही शासन का आधार था पर कहीं–कहीं गणराज्यों के भी उदाहरण देखने को मिलते हैं। इस काल में पहली बार क्षेत्रीय राज्यों का उद्‌भव हुआ। तथा राजा अब उस प्रदेश पर शासन करने लगा। जो पूर्व में कबीले पर शासन करता था। इस काल में नियमित कर प्रणाली शुरू हुई। तथा राजा का पद अब वंशानुगत हो गया। उत्तर वैदिक काल में भी नियमित सेना की अवधारणा स्थापित नहीं हुई थी।

सिन्धु सभ्यता के उद्‌भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महत्वपूर्ण कारको, कृषि एवं वाणिज्य–व्यापार के प्रसार, पशुपालन तथा विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण आधार थे। सर्वप्रथम सिन्धु सभ्यता के लोगों द्वारा कपास का उत्पादन किया गया। इसलिए यूनानियों ने सिन्धु शब्द को सिंडोन नाम से सम्बोधित किया। संभवतः सिन्धु नदी से हर साल आने वाली बाढ़ के कारण इस क्षेत्र की उर्वरता अधिक थी। प्रमुखतः गेहूँ तथा जौ की कृषि की जाती थी। इस काल में व्यापार का माध्यम वस्तु विनिमय था। इस काल में सिक्कों का प्रचलन नहीं था। सिन्धु सभ्यता में संभवतः किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। सिन्धु निवासी तांबे के साथ टिन मिलाकर कांसा तैयार करते थे।

आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था। ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल में कृषि कार्यों का उल्लेख है। ऋग्वेद में कई शिल्पियों का भी उल्लेख मिलता है। उत्तर वैदिक काल में 1000 ई॰ पू॰ के आसपास भारत में लोहे की खोज हुई। जिसके कारण कृषि क्षेत्र में क्रांति आ गई। लोहे को श्याम अयस की संख्या दी गयी थी। अतरंजीखेड़ा नामक स्थल से कृषि से सम्बंधित लौह उपकरण प्राप्त हुए हैं। कृषि तथा शिल्पों का विविधिकरण उत्तर वैदिक काल के लोगों द्वारा स्थायी जीवन अपनाने में सहायक बने। उत्तर वैदिक काल के लोगों के भौतिक जीवन में व्यापक स्तर पर उन्नति देखने को मिली। मूर्तियों में एक मूर्ति के गर्भ से पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है। जिससे सैन्धव निवासियों द्वारा धरती को उर्वरता की देवी मान कर पूजा करने का आभास मिलता है। इस काल में लोग आलौकिक सत्ता की पूजा मानव, पशु तथा वृक्ष तीनों रूपों में करते थे। एक मुहर पर अंकित पुरूष देवता का चित्र प्राप्त हुआ है। इस देवता को पशुपति महादेव बताया गया है। सिन्धुघाटी निवासी देवताओ की पूजा तो करते थे किन्तु इन देवताओं के लिए मंदिर निर्माण नहीं करते थे, जैसे धार्मिक स्थल मिस्र तथा मेसोपोटामिया की सभ्यता में मिले हैं। मूर्तिपूजा का प्रारम्भ सम्भवतः सैन्धव सभ्यता से ही होता है।

ऋग्वैदिक काल में धार्मिक कर्मकांड भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु किए जाते थे। ऋग्वैदिक लोग सार्वभौमिक सत्ता में विश्वास रखते हुए बहुलवादी हो गए थे। आर्यो के देवताओं की तीन श्रेणियाँ थी जिन्हे प्रकृति का प्रतिनिधि मान कर पूजा जाता था–

1. आकाश के देवता
2. अंतरिक्ष के देवता तथा
3. पृथ्वी के देवता। देवताओं में कुछ देवियाँ भी सम्मिलित थी, किन्तु इस काल में देवियों की प्रमुखता नहीं थी। ऋग्वैदिक काल में मूर्ति पूजा का उल्लेख नहीं मिलता है। देवताओं की आराधना हेतु स्तुतिपाठ पर अधिक बल था। उत्तर वैदिक काल में भौतिक उद्‌देश्यों की प्राप्ति हेतु यज्ञों का प्रचलन महत्वपूर्ण हो गया। यज्ञो में पशु की बलि भी दी जाती थी। ऋग्वैदिक देवता इन्द्र एवं अग्नि की प्रमुखता उत्तर वैदिक काल में कम हो गई तथा प्रजापति को उत्तर वैदिक काल में सर्वोच्च देवता के रूप में स्थान मिला। उपनिषदों में कर्मकाण्डों की निंदा की गई है।

सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता के मध्य उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त कई अन्य असमानताएं भी विद्यमान थी। जैसे–सैन्धव सभ्यता नगरीय थी एवं वैदिक सभ्यता ग्रामीण। सिन्धु निवासी शान्तिप्रिय थे किन्तु वैदिक आर्य युद्धप्रिय। सिन्धु सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे किन्तु वैदिक काल में लोहे का प्रचलन था। सिन्धु सभ्यता में मूर्तिपूजा एवं लिंग पूजा का प्रचलन था किन्तु वैदिक काल में इस प्रकार की प्रथा नहीं थी।

उपरोक्त असमानताओं के विद्यमान रहने के उपरान्त भी दोनों सभ्यताओं के मध्य कुछ समानताएं भी विद्यमान थी। जैसे– दोनों सभ्यताओं में किसी धार्मिक स्थल के साक्ष्य नहीं मिले हैं। दोनों सभ्यताओं में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं को कालान्तर में हिन्दू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान मिला। सिन्धु सभ्यता में प्रचलित गणितीय प्रणाली वैदिक गणित में सहायक बनी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दोनों सभ्यताओं के मध्य अनेक समानता एवं असामानता के तत्व यद्यपि विद्यमान थे किन्तु दोनों भारत की प्राचीन सभ्यताएं हैं तथा दोनों सभ्यताओं की अपनी विशिष्टताएं है जिसके कारण वे इतिहास में महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ स्त्रोतः

1. शर्मा रामशरण (1999), प्राचीन भारत, एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ दिल्ली।

2. झा द्विजेन्दनारायण, श्रीमाली कृष्णमोहन (2005) प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. सिंह सुनील कुमार (2016), सामान्य ज्ञान, लूसेन्ट पब्लिकेशन, पटना।
4. सिंह मणिकान्त (2009), भारतीय इतिहास–एक विश्लेषण, किताब महल, इलाहाबाद।
5. प्राचीन भारत (2001), प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
6. प्रसाद कामेश्वर (2009), भारत का इतिहास–(आदिकाल से 1206 ई॰), भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना।
7. सिंह सूरज (2019), सामान्य अध्ययन, ड्रीमर्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. सिंह नागेन्द्र प्रताप (2006), भारतीय इतिहास, किरण कम्पटीशन टाइम्स, इलाहाबाद।
9. पाण्डे एस. के. (2014), प्राचीन भारत, प्रयाग पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
10. बिहार समग्र अवलोकन (2019), दृष्टि पब्लिकेशन, दिल्ली।